RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

रामायण के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. प्रदीप कुमार सिंह

अध्यक्ष– हिन्दी विभाग साठये महाविद्यालय (मुंबई विद्यापीठ) मुंबई – महाराष्ट्र

हमारे महाकाव्यों रामायण और महाभारत की प्रसिद्धी के संबंध में कोई आशंका नहीं है। सालों से इन दोनों महाकाव्यों ने जन–जीवन को प्रभावित किया है। कवियों ने भी इसके प्रभाव से आश्चर्यचकित हो, इसकी कथाओं का भिन्न–भिन्न प्रकार से गान किया है। इन महाकाव्यों की मूल कथा में प्रकाशित अंशों के जुड़ते जाने से मूल कथा भी बहुरंगी बनती रही है। रामायण की कथा में सीता– निर्वासन का मूल कारण तो लोकापवाद ही बतलाया गया है, किन्तु परोक्ष कारण भी उल्लिखित है। श्वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता –त्याग का एक कारण है विष्णु द्वारा भृगु–पत्नी की हत्या,जिसके फलस्वरूप भृगु ने विष्णु को शाप दिया था कि तुम्हें भी मनुष्य बनकर पत्नी–वियोग का दुःख सहना पड़ेगा। डॉ. कामिल बुल्के के अनुसार "इस शाप का उल्लेख रामायण के गौड़ीय तथा पश्चिमोत्तरीय पाठों में नहीं मिलता। इसके उतिरिक्त तारा द्वारा राम को शाप तथा उपरिलिखित प्रसंग (राम द्वारा पति के आयुष्य का भोग) का उल्लेख किया जा सकता है।''

इससे स्पष्ट है कि कवियों ने अपनी प्रतिभा के माध्यम से कथा–परिवर्तन किया है तो आदिवासी प्रजा ने अपनी मौखिक परंपराओं में अपने जीवन के साथ जोड़कर, उसे वर्णित किया है। इसीलिए तो धोबी की कथा से अधिक एक स्त्री की चुगली से राम सीता का त्याग करते हैं। यह बात हमें अधिक सामाजिक प्रतीत होती है। सीता–त्याग का मूल कारण तो राम के गुप्तचर दुर्मुख द्वारा एक धोबी और धोबन की बात राम तक पहुँचाने की थी, किन्तु लोक–जीवन में यह घटना धीरे–धीरे परिवर्तित होती रही। जिसके परिणामस्वरूप लोक–साहित्य में सीता–त्याग का मुख्य कारण धोबी–धोबन के बीच का झगड़ा नहीं, किन्तु सीता द्वारा सास की गैरहाजिरी में साधु (रावण) को भिक्षा देना था–

घाटा वरूनी आला जोगी उतरला सीता दारी
घाल सीता माल भिक्षे
काय घालु तुला भिक्षे?
केगई सासु नाइ घरी
गेली कवले बजारा
मोड तो दळाची केजी
घेती मेथी चे भाजे
भाजे घेवुन भरले लटें
वटें फेडुन भरले पांटे
केले सोनय चुंभळी
ठेवले माथे वरी उचलुन
केगई सासु आली घरी
आनव सीता झारी पानी
सीता जेली जेली गेली रांजुन जव
सीता बुडवते झारी
फुईजी आला होता जोगी
नाई घेते तुझा पानी
नको तोंडी पाप घेव
तुं त जोगयेची रानी
तोत माझा माई बाप
लकसीमन माझे मूला
जाई रे आंबये वनाल
तोडा आंबये चा धुरी

सेंडा
बुहउक
टोकजों मधला काडां धरजो
तें चा अरत बनावजो
सावळ पोवळ दोनी नंद
अरताल व जुंतल
सीता बसली अरतांत
लकसीमन बसल धरीवर
अरत चालला धड धड
सीता रड ढळ ढळ
अरत चालला वनां मधी
सीता रड मनां मधी।

अनुवाद – (घाट से आया साधु (रावण), ऊतरा सीता के आँगन के पास ।
सीता मुझे भिक्षा दे।
क्या दूँ तुझे भिक्षा।
मेरी सास घर पर नहीं है।
गई है कवले बाजार।
लेने भाजी मेथी (केजी) की।
भाजी लेकर रखे वस्त्र में,
वस्त्र से भाजी रखी पात्र में।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

बनायी सोने की ईदुरी
बाजार से सास आयी घर।
ला सीता झारी में पानी।
सीता गई रांजुन (पानी के साधन) के पास।
सीता झारी डुबोकर कहने लगी–
सासजी, साधु आया था।
सास ने कहा–नहीं चाहिए तुम्हारे हाथ का पानी
नहीं चाहिए तेरा पाप।
तुम तो अब (हो गई) साधु की रानी।
वह तो मेरा बाप होगा
लक्ष्मण मेरा बेटा।
जा तू आम के बगीचे में
तोड़ ला आम की धुरी (डाल)
टहनी तोड़ डालना, तना तोड़ डालना, बीच का भाग रखना।
उसका रथ बनाना।
सावळ–पोवळ नामक दो बैलों को
स्थ के जुआठ में बाँधना।
सीता बैठी रथ में,
लक्ष्मण बैठा धुरी पर,
रथ चला धड़–धड़
सीता रोने लगी जार –जार
रथ तो चला वन (के बीच) में
सीता तो रोये मन में)

रामायण में तो एक धोबी के कारण राम सीता का त्याग करते हैं वर्णित है जब कि ऊपर वर्णित दक्षिणी गुजरात की 'कुंकणा' बोली के गीत में सीता–त्याग का कारण तो सीता द्वारा रावण को भिक्षा देना बताया गया है, जिसके कारण उसकी सास लक्ष्मण द्वारा उसे वन में छोड़ आने को कहती हैं, जब कि दूसरी और एक अवधी गीत में राम द्वार सीता–त्याग का कारण उसकी ननद की चुगली बतायी गई है ।

राजा दशरथ की शांता नाम की एक बेटी थी जिसे राजा ने अपने एक मित्र अंग देशाधिपति रोमपाद को दत्तक दिया था अर्थात् सीता की एक ननद भी थी। (वैसे भी कहा जाता है कि भाभी और ननद के संबंध देवर–भाभी जैसे मधुर नहीं होते। भाभी की बातों को भाई तक पहुँचाने के लिए ननद (बहन) ही अधिक कारगर होती है)– सो ननद की चुगली के कारण राम ने सीता का त्याग किया था–

ननद भौजी मिलि कोल करें अउरौ खियाल करै हो ।
भौजी जरैन रावन तोहरा बैरी उरेहि देखावह हो ।
जौं मैं रखना उरेही उरेहि देखावह हो।
ननदी सुनि पइहैं बिरन तोहार त देसवा निकरिहैं हो ।
लाख दोहइया राजा दसरथ राम मथवा छुवौं हो।
भौजी लाख दोहइया लछिमन भइया जौ भइया से बतावह हो ।
मांग –टिकुलिया गंगाजल पानी हो ।
ननदी समुहे कै ओबरी लिपावउ रवना उरेहौं हो...
मांग –टिकुलिया गंगाजल पानी हो ।
सीता समुहे कै ओबरी लिपाइन रावना उरहैं हो...
हंथवह सिरजिन, गोड़वहु ,नयना बनाइन हो ।
आइ गए हैं सिरिराम अंचर छोरी मुंदेनि हो...
जेवन बइठे सिरिराम बहिन लोहि लाइन हो।
भइया जवन रावन तोर बैरी त भौजी उरेहैं हो...
अरे–अरे लछिमन भइया बिपतिया के साथी हो ।
भैया सीता के देसवा निकारा त रावना उरेहैं हो।
जे भौजी भूखे के भोजन नंगे को बिस्तर हो।
भइया से भउजी गरुहे गरभ से मैं कैसे निकारौं हो।
अरे –अरे लछिमन भइया बिपतिया के नायक हो।
भैया सीता के देसवा निकारा त रखना उरेहैं हो...
अरे भौजी सीता रानी बड़ी ठकुराइन हो।
भौजी आवा है तोहका नेवतवा बिहान बन चलबई हो...
ना मोरे नैहर ना मोरे सासुर हो।
देवरा ना रे जनक अस बाप मैं केहि के जइहैं हो...
कोइंछवां कै लिहिन सरसइया छिंटत सीता निकसी हो।

सरसौं एही रहिया अइहैं लछिमन देवरा कंदरिया तोरी खइहैं हो.

एक वन डांकिन दुसर बन तिसरे बिन्द्रावन हो ।
देवरा एक बुंद पनिया पियउतेउ पियसिया से
व्याकुल
हो...
बैठउ न भौजी चंदन तरे चंदन बिरिछ तरे हो।
भौजी पनिया खोज करि आई तोहका पियाइत हो ।
बहै लागी जुड़ली बयरिया कदम जुड़ी छंहियां हो।
सीता भुंइया परी कुम्हिलाय पियसिया से व्याकुल हो...
तोरिन पतवा कदम कर दोनवा बनाइन हो।
टांगिन लंवगिया कै डरिया लछन चले धरिके हो...
सोय साय सीता जागी झझकि सीता उठिहैं हो ।
कहवां गये लछिमन देवरा त हमैं न बतायहु हो...
हिरदइया भर देखतेउँ नजर भर रोउतेउ हो ।

अर्थात् ननद और भाभी के बीच में हँसी–मजाक चल रहा है। इतने में ननद कहती है कि भाभी, जो रावण तुम्हारा बैरी है उसका चित्र बनाकर दिखाओ। सीता चित्र बनाने के लिए आनाकानी करती हैं। उन्हें डर है कि यदि में चित्र बनाऊँगी और राम को पता चलेगा तो वे मुझे घर से निकाल देंगे। ननद सौगंध खाकर कहती है कि तुम रावण का चित्र बनाओ, मैं भैया से नहीं बताऊँगी। राम खाना खाने आते हैं और बहन आकर कह देती है कि जो रावण तुम्हारा बैरी है, भाभी ने उसका चित्र बनाया है। इतना सुनते ही राम लक्ष्मण

को बुलाते हैं और आदेश देते हैं कि सीता को वन में छोड़ आओ।

राम द्वारा सीता के वनवास की आज्ञा सुनकर लक्ष्मण एक बार तो उनका विरोध करते हैं, लेकिन फिर सिर झुकाकर उनके आदेशों का पालन करते हैं। सीता को लक्ष्मण जाकर वन में छोड़ आते हैं। सीता लक्ष्मण से पानी माँगती हैं, लक्ष्मण पानी लेने जाते हैं। तभी सीता को नींद आ जाती है। मौके का फायदा उठाकर लक्ष्मण वहीं सीता को छोड़कर चले आते हैं। सीता विलाप करती हैं।

यह गीत बिहार, छोटा नागपुर और बुंदेलखण्ड तक में प्रचलित है श्री रामनरेश त्रिपाठी ने इस गीत का पाठांतर इस प्रकार दिया है–

ननद भौजाई दूनों पानी गई, अरे, पानी गई।
भौउजी जवन रावन तुम्हें हरि लेइ ग उरेहि देखावहु ।।

एक बँदेली गीत में यह घटना इस रूप में वर्णित है–

आम इमिलिया के नन्हीं–नन्हीं पतिया
निबिया की शीतल छांह।
वहि तरे बइठी ननद
चलै लागि रावन की बात ।
तुम्हरे देश भउजी रावन बनत है
रावन उरेह दिखाव।
तो मैं एतना उरैहो बारी ननदी
जो घर करो न लबार।

अर्थात् आम और इमली के नन्हें–नन्हें पत्ते हैं। नीम की शीतल छाया। उसके नीचे बैठी हैं ननद–भौजाई। वहाँ रावण की बात होने लगी। (ननद ने कहा) हे भाभी! तुम्हारे देश में तो रावण बनाये जाते हैं। उसका चित्र बनाकर दिखाओ । (भाभी ने कहा) अगर तुम घर में किसी से न कहोगी तो मैं चित्र अवश्य बनाऊँगी, मेरी लाडली ननद ।

थाईलैंड की रामकीर्ति कथा (थाई भाषा में रामकीन) का विन्यास 'वाल्मीकि रामायण' जैसा ही है। पर इसमें अनेक प्रसंग स्थानीय परिपाटियों के अनुसार जोड़े गए हैं। उसके अनुसार तो शूर्पनखा की बेटी सीता से प्रतिशोध लेती है। वह नौकरानी बनकर अयोध्या आती है और सीता से रावण का रेखाचित्र बनाने को कहती है ,बाद में वह राम को यह दिखालाती है। ईर्ष्या के मारे राम स्वयं सीता की हत्या का आदेश लक्ष्मण को देते हैं। पर लक्ष्मण करुणा के वशीभूत होकर ऐसा नहीं करते, बल्कि सीता को जंगल में छोड़ आते हैं।

आचार्य श्री तुलसी के 'अग्निपरीक्षा' काव्य के अनुसार राम बहुपत्नीक थे। सीता की सपत्नियों ने छल का सहारा लेकर सीता से रावण के पैरों का चित्र बनवा लिया तथा राम के मन में सीता की पवित्रता को लेकर संदेह उत्पन्न कर दिया। इसके अतिरिक्त ये रानियाँ अपनी–अपनी दासियों के द्वारा घर–घर में सीता के ऊपर थोपे गये कलंक का प्रचार करवाती हैं। इस संदर्भ में प्रेमचंद माहेश्वरी का यह मत है कि "संभवतः इस घटना की प्रेरणा कवि को लोकगीतों से मिली होगी," ऊपर वर्णित लोकगीतों में प्राप्त सीता–कथा के आधार पर यह उचित प्रतीत होता है।

संदर्भ

१. रामकथा, पृ. ७००–७०१
२. राम साहित्य– श्री रामनरेश त्रिपाठी, पृ. २०८
३. लोकगीत में रामकथा–श्री रामनरेश त्रिपाठी, (रा. क.मैथिलीशरण गुप्त, अभिनंदन गुप्त) पृ. ६६१
४. अग्निपरीक्षा, स्वर्ग–२, पृ. २८–२६
५. हिन्दी रामकाव्य का स्वरूप और विकास, पृ. १६२

RRIJM 2015, All Rights Reserved